International Journal of Advanced Innovation and Research
Vol 3, Issue 1, January 2025
ISSN: 2584-2129

RESEARCHER

INTERNATIONAL JOURNAL OF
ADVANCED INNOVATION AND RESEARCH
journal homepage: www.ijair.in

1857 ईसवी की क्रांति: विभिन्न दृष्टिकोण

*[1]**डॉ. विनोद कुमार**
*[1]सहायक अध्यापक, कुरूक्षेत्र

Keywords
राष्ट्रीय आंदोलन
1857 की क्रांति
प्रतिरोध और विद्रोह
राज्य निर्माण

ABSTRACT

विचारों की अभिव्यक्ति | भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में 1857 ईसवी के क्रांति एक युगांतकारी घटना मानी जाती है जिसमें ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध विरोध का प्रदर्शन भारतीय जनता द्वारा एकजुट होकर प्रदर्शित होता है। लंबे समय से चली आ रही भारतीयों में असंतोष की भावना सरकार के विरुद्ध उभर कर आई।
विषय प्रस्तुति:-राज्य का निर्माण भावनाओं, वफादारी, आत्महित और बल से होता है लेकिन तकनीकी और भौतिक परिवर्तन निर्णयकारी होते हैं किंतु उनका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि लोग स्वयं को एवं अपने सम्मिलित होने के क्षमता को किस प्रकार परिभाषित करते हैं। राष्ट्र विकसित होते हैं न केवल पूंजीवाद के तर्क से बल्कि प्रतिरोध विद्रोह एवं कानून से, जो विचारों और अनुभवों की अभिव्यक्ति है।

परिचय:

1857 ई. में उत्तरी और मध्य भारत में घटित घटनाओं को लेकर इस प्रकार का एक विरोध हुआ जिसे सिपाही विद्रोह की संज्ञा दी गई लेकिन कुछ इतिहासकार इसे 'जन आंदोलन' के रूप में देखने हैं। इस घटना को अनेक विद्वानों ने अलग-अलग ढंग दृष्टिकोणों से वर्णित किया है। एरिक स्टोक्स ने तर्क दिया है कि 1857 ईसवी का विद्रोह एक नहीं बल्कि कई विद्रोहों का समावेश था। अतः इसे किसी एक परिभाषा में बांधना उचित प्रतीत नहीं होता। अर्थात 1857 विभिन्न विद्रोहों को विभिन्न तरीके से परिभाषित यह रहा आपकी नई इमेज का पूरा टेक्स्ट:

किया जा सकता है। विभिन्न परिभाषाएं विभिन्न अर्थों का संकेत देती है, जिन्हें हम ऐतिहासिक घटनाओं से जोड़ना चाहते हैं। एक ही ऐतिहासिक घटना से अलग-अलग सामाजिक समूह अलग-अलग अर्थ जोड़ने का प्रयास इसलिए करते हैं क्योंकि नया अर्थ समसामयिक परिवेश में उन सामाजिक समूहों की पहचान तय करता है तथा यह पहचानना उनके वर्तमान काल की जरूरतों को पूरा करने का माध्यम बनता है।*1 पिछले 150 वर्षों में 1857 ईसवी की ऐतिहासिक घटनाओं के लगभग प्रत्येक पहलू पर विचार विमर्श किया गया है। वर्तमान काल की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उन्हें पुनः कल्पित एवं पुनः परिभाषित करने का प्रयास भी किया गया है। परिणामस्वरूप 1857 ई. के इतिहास की व्याख्या करने वाले कई उपागम (Approach) या दृष्टिकोण उभर कर सामने आए हैं, जिन्हें मोटे तौर पर सात भागों में बांटा जा सकता है- जिनमें मुख्य रूप से औपनिवेशिक उपागम, राष्ट्रवादी उपागम, मार्क्सवादी उपागम, अभिजात वर्गीय उपागम, निम्न वर्गीय उपागम, दलित उपागम एवं नारीवादी उपागम है।

1857 ई. का विद्रोह और विभिन्न उपागम (Approach):-

1 औपनिवेशिक उपागम :- औपनिवेशिक उपागम के अनुसार 1857 ईसवी का विद्रोह कुछ बिखरे हुए कुछ कमजोर विद्रोहों का समूह था जिसमें राष्ट्रवादी चरित्र की अनुपस्थिति थी, अर्थात 1857 का विद्रोह राष्ट्रवाद की विचारधारा से प्रेरित नहीं था। उसका उद्देश्य है भारतीय राष्ट्र राज्य का निर्माण करना नहीं था। वह मुगल साम्राज्य को पुनः स्थापित करने का एक मुसलमानी षड्यंत्र था अथवा पुराने सामंती तत्वों द्वारा संचालित एक हिंदू आंदोलन था। पीटर रॉब के अनुसार वह मुख्यतः एक 'सिपाही विद्रोह' था जिससे कालांतर में आम नागरिक भी जुड़ गए क्योंकि वे बदतर कानून व्यवस्था का लाभ उठा सकते थे। चार्ल्स बॉल, जॉन केई और जॉर्ज ट्रेवेल्यान के दृष्टिकोण से 1857 का इतिहास विद्रोह के दमन का इतिहास था, जो अंग्रेजी नस्ल के साहस को प्रमाणित करता था। जेम्स स्टीफन ने 1857 ई. की घटना को एक ऐसे सबूत के रूप में प्रस्तुत किया जो सिद्ध करता था कि भारतवासियों में सुधार का सामर्थ्य में होने के कारण भारत के विकास हेतु अंग्रेजी साम्राज्य की उपस्थिति अनिवार्य थी।2 थामस मटकॉफ ने स्वीकार किया कि 1857 का विद्रोह सिपाही विद्रोह से कहीं अधिक परंतु राष्ट्रीय आंदोलन से कुछ कम था। उनका दावा था कि विद्रोह के नेतागण पराजय में तो एकजुट थे किंतु विजयी होने पर एक दूसरे के दुश्मन बन सकते थे। 3 निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि साम्राज्यवादी उपागम के अनुसार 1857 के विद्रोही 'विभिन्न निजी हितों से प्रेरित होकर विद्रोह पर तो उतर आए थे, किंतु उनके समक्ष अंग्रेजी साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने तथा एकीकृत भारतीय राष्ट्र निर्माण का न तो लक्ष्य था और न ही इस प्रकार के लक्ष्य प्राप्ति की कोई योजना थी।

राष्ट्रवादी उपागमः- राष्ट्रवादी उपागम या दृष्टिकोण के अनुसार 1857 का विद्रोह आधुनिक भारतीय राष्ट्र के राज्य के उद्भव की दिशा में महत्वपूर्ण चरण था। औपनिवेशिक उपागम के ठीक विपरीत राष्ट्रवादी उपागम के अनुसार 1857 का विद्रोह राष्ट्र की भावना से ओतप्रोत था। उसका परम लक्ष्य भारत को अंग्रेजी शिकंजे से मुक्त करना तथा उसे एक स्वतंत्र एवं संप्रभु राष्ट्र के रूप में स्थापित करना था।

वीर सावरकर ने 1857 की घटना को 'भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम' कहा है। उनकी मान्यता के अनुसार 1857 ईसवी का विद्रोह भारत के खिलाफ अतीत में किए गए अन्याय का परिणाम था। बेंजामिन डिजरैली पृ तथा कार्ल मार्क्स जैसे चिंतकों ने भी 'सिपाही विद्रोह' में 'राष्ट्रीय विद्रोह' के तत्वों को देखा था। 1944 ईस्वी में भारतीय राष्ट्रीय सेना को संगठित करते समय सुभाष चंद्र बोस ने भी यह आशा व्यक्त की थी कि वह 1857 की पराजय का बदला लेंगे।*3 1857 के विद्रोह की 150 वीं वर्षगांठ पर भारतीय संसद द्वारा उसे सरकारी स्वरूप में सरकारी रूप से स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध घोषित करना उसके राष्ट्रवादी स्वरूप की पुष्टि करता है।

मार्क्सवादी दृष्टिकोणः-

मार्क्सवादी दृष्टिकोण के अनुसार 1857 के विद्रोह को संपूर्ण आधुनिक अर्थ में राष्ट्रवादी नहीं माना जा सकता। हालांकि विद्रोह में विदेशी विरोधी संवेदना थी किंतु राज्यों के संरक्षण की नवीन नीति पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए कार्ल मार्क्स ने लिखा है कि जिन दशाओं के अंतर्गत सामंती राज्यों को स्वतंत्र रहने की अनुमति दी जा रही है, वहीं दशाएं भारत की प्रगति में बाधक है।*4 रजवाड़े अंग्रेजी व्यवस्था को कायम रखने वाले गढ़ हैं तथा भारतीय विकास के मार्ग में सबसे बड़ी रुकावट है।

मार्क्स के अनुसार अंग्रेजों ने हिंदुस्तान में इतनी बड़ी फौज पहले कभी केंद्रित नहीं की थी। वह फौज हर तरफ बिखरी हुई थी। मार्क्स ने एक और तो अंग्रेजों की सैनिक स्थिति की इस कमजोरी की तरफ संकेत किया है कि उन्हें फौज बिखरा कर रखनी पड़ती है, दूसरी ओर दिखाया कि अगर राजस्थान और महाराष्ट्र में संघर्ष जोर पकड़ा तो उनकी स्थिति और भी संकटमय हो सकती है। मार्क्स ने इस संभावना का इस तरह उल्लेख किया था कि मानो वे चाहते हों कि वहां संघर्ष फैले।*5

रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक सन सत्तावन की राज्यक्रांति और मार्क्सवाद (1990) में मार्क्स के लेखों पर प्रकाश डाला है। उन लेखों में बिहार के छापामारों का हवाला देने के बाद मार्क्स ने लिखा "अवध और रूहेलखंड के विद्रोहियों के साथ इनकी कार्यनीति की समानता स्पष्ट है" उन्होंने यह तथ्य लोगों के सामने रखा कि संघर्ष एक बड़े पैमाने पर चल रहा था। हिमालय से लेकर बिहार और विंध्याचल तक और ग्वालियर तथा दिल्ली से लेकर गोरखपुर और दीनापुर तक सारे प्रदेश सक्रिय विद्रोही समूहों से भरे पड़े थे। वे लोग साल भर के युद्ध के अनुभव के बल पर एक हद तक संगठित थे। कई बार हारने पर भी इस बात से उत्साहित होते थे कि लड़ाई निर्णायक नहीं होती थी और अंग्रेजों को बहुत थोड़ा लाभ होता था। हालांकि मार्क्सवादी उपागम 1857 के विद्रोह को राष्ट्रीय एकीकरण की दिशा में किया गया लोकतांत्रिक प्रयास नहीं मानता किंतु यह

स्वीकार करता है कि इसके द्वारा अंग्रेजों को दी गई साहस पूर्ण चुनौती देशभक्ति की प्रेरणा का स्रोत बनी। ए.आर. देसाई का कथन है कि कुछ आतंकवादियों एवं चरम वामपंथी राष्ट्रवादी राष्ट्रवादियों ने 1857 ईसवी के विद्रोह को भावी सफल स्वतंत्रता संग्राम की पूर्व तैयारी के रूप में देखा।*6

अभिजातवर्गीय उपागम:-

अभिजातवर्गीय उपागम के अनुसार 1857 का विद्रोह उच्च एवं कुलीन वर्गों, रजवाड़ों, तालुकदारों एवं सामंती बुद्धिजीवियों द्वारा संचालित था। विद्रोह में आम जनता की सक्रियता न होने के कारण उसकी प्रशासनिक नीतियों उनके पारंपरिक लाभप्रद स्थिति के लिए खतरा थी। सब्यसाची दासगुप्ता ने यह तर्क दिया है कि विद्रोह में भाग लेने वाले किसान भी 'वर्दीधारी सिपाही' थे तथा वर्दी ने किसानों को भारतीय समाज के नए बुद्धिजीवियों में परिणत कर दिया था। विद्रोह के द्वारा वर्दीधारी किसान भारत में विद्यमान शक्ति के पारंपरिक पदसोपान के अंतर्गत अपने लिए स्वायत्त स्थान निर्मित कर रहे थे। हालांकि एरिक स्टोक्स एवं जुडिथ ब्राउन जैसे इतिहासकारों ने ग्रामीण विद्रोह के अभीजातीय चरित्र को विवादास्पद बताया है। उनके कथा अनुसार नाना साहिब एवं झांसी की रानी जैसे पुराने सामंती तत्वों को सिपाहियों के खास आग्रह पर विद्रोह में सक्रिय होना पड़ा। मुखर्जी ने बताया है कि अवध के ताल्लुकदारों को भी किसानों एवं शिल्पकारों के अनुरोध एवं जिद्द से मजबूर होकर विद्रोह में हिस्सा लेना पड़ा। रामविलास शर्मा ने भी विद्रोह के लोकतांत्रिक चरित्र पर बल देते हुए यह उजागर किया कि बहुसंख्यक आधुनिक बुद्धिजीवियों ने विद्रोह का समर्थन नहीं किया क्योंकि पाश्चात्य विचारों से प्रभावित होने के कारण वह विद्रोह को अपने वैश्विक दृष्टिकोण से देखते थे।*7

निम्नवर्गीय उपागम :-

निम्नवर्गीय उपागम का विकास अभिजातवर्गीय उपागम के खिलाफ प्रतिक्रिया के रूप में हुआ। इसके अनुसार 1857 का विद्रोह भारत की उच्च वर्गों की नहीं बल्कि आम जनता, ग्रामीण किसानों, शिल्पकारों, मजदूरों एवं सिपाहियों की पहल का परिणाम था। रूद्रांगशु मुखर्जी ने विद्रोह में हिस्सा लेने वाले सिपाहियों को वर्दीधारी किसान की संज्ञा दी है जो विद्रोह के दौरान वर्दी का त्याग कर साधारण किसानों में घुल मिल गए थे। इस दृष्टि से 1857 का विद्रोह औपनिवेशिक काल के 'किसान विद्रोह' के सभी लक्षणों से परिपूर्ण था। वह एक सुनियोजित विद्रोह था जिसमें पंचायतों द्वारा निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया का स्पष्ट प्रावधान था। उसका लक्ष्य वर्चस्व प्राप्त वर्गों एवं उनकी संपत्ति को विनिष्ट करना था। अतः विद्रोह के दौरान जनसाधारण ने अंग्रेजों के साथ साथ ईसाई धर्म को मानने वाले भारतीयों तथा अंग्रेजी जीवन पद्धति को अपनाने वाले बंगाली बाबुओं पर भी हमला किया। इस संदर्भ में कानपुर के सतीचौरा घाट एवं बीवीघर हत्याकांड उल्लेखनीय हैं। निष्कर्षतः निम्नवर्गीय उपागम के अनुसार 1857 का विद्रोह जन आंदोलन था जिसमें आम जनता ने औपनिवेशिक एवं भारतीय उच्च वर्गीय शोषकों सम्मिलित सत्ता के खिलाफ आवाज उठाई।*8

दलित उपागम:-

दलित उपागम 1857 के विद्रोह के राष्ट्रवादी स्वरूप को तो स्वीकार करता है लेकिन राष्ट्र के वर्चस्ववादी निर्माण को चुनौती देते हुए दलितों की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देता है। चारू गुप्ता एवं बद्रीनारायण ने यह प्रदर्शित किया है कि दलित उपागम क्षेत्रीय मौखिक परंपरा से अपने नायक एवं नायिकाओं जैसे झलकारी बाई और मातादीन भंगी का आविष्कार करता है जो ने सिर्फ 1857 के विद्रोह में दलितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। लता सिंह ने विद्रोह में लखनऊ और कानपुर की दासियों की राष्ट्रीय चेतना पर आधारित सहभागिता के विषय में जानकारी दी है। रोचना मजूमदार और दीपेश चक्रवर्ती ने 'मंगल पांडे' जैसे चलचित्र का विश्लेषण करते हुए विद्रोह में बैरकपुर की कारतूस मिल में कार्यरत अछूत कर्मचारियों की अहम भूमिका को स्पष्ट किया है। शशांक सिन्हा ने विद्रोह में छोटा नागपुर के आदिवासियों के योगदान पर प्रकाश डाला है। जो अंग्रेजों द्वारा अपने जादू टोने की सांस्कृतिक प्रथा पर प्रतिबंध लगाए जाने के खिलाफ थे।*9

नारीवादी उपागम :-

1857 ईसवी के विद्रोह में महिलाओं की विशेष भूमिका पर प्रकाश डालता है तथा यह स्पष्ट करने की कोशिश करता है कि विद्रोह के पश्चात पुरुषों तथा स्त्रीत्व की अवधारणा में परिवर्तन आया। दलित वीरांगनाओं की कहानियां 1857 के इतिहास की उस अभिजातीय व्याख्या को चुनौती देती है जिसमें साधारण महिलाओं को

नजरअंदाज किया गया है। माइकल फिशर ने दर्शाया है कि 1857 के विद्रोह के पश्चात भारतीय पुरुषों की एक धूमिल छवि विकसित हुई जिसके फलस्वरूप लंदन में भारतीय पुरुषों के साथ अंग्रेजों के सौहार्दपूर्ण व्यवहार में परिवर्तन आया। जेन रॉबिंसन ने अंग्रेजी मेमसाहिबों एवं उनके भारतीय सेवकों के मध्य पनपने वाले अविश्वास की चर्चा की है। विद्रोह के दौरान अंग्रेजी महिलाएं भी भारतवासियों की हिंसा का शिकार हुई थी।*10

अतः विद्रोह के उपरांत अंग्रेजी स्त्रीत्व अंग्रेजी शुद्धता का प्रतीक बन गया। ऐश्वर्या लक्ष्मी ने भारत के 'नारीवादी घरेलू स्थान' एवं ब्रिटेन के 'पुरुषवादी औपनिवेशिक स्वामी' के बीच असमान शक्ति के संबंध में उजागर किया है। इंद्रानी सेन ने यह दर्शाया है कि झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का चित्रण कुछ अपवादों के बावजूद, लिंग के औपनिवेशिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए किया गया है।*11

उपसंहारः-

विभिन्न उपागमों द्वारा 1857 के विविध विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि विद्रोह के कई सामाजिक आधार थे। अन्य शब्दों में कहें तो भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों ने अलग-अलग कारणों से विद्रोह में हिस्सा लिया जिसे विद्रोह की प्रकृति बहुआयामी हो गई तथा उसके दूरगामी परिणाम दिखाई दिए जो कि अंततः ब्रिटिश सरकार को भारतीय प्रशासन में अनेक परिवर्तन करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. स्टोक्स एरिक, द पीजेंट आर्म्ड: दा इंडियन रिबेलीयन आफ 1857, कैलेंड्रन प्रेस, 1986, पृष्ठ 226 -243
2. बंधोपाध्याय, शेखर, एटींथ फिफ्टी सेवन एंड इट्स मैनी हिस्ट्रीज: 1857 एसेस फ्रॉम ई.पी.डब्ल्यू. ओरियंट लॉन्गमैंन, 2008 पृष्ठ 3
3. स्टीफन, जेम्स एफ., "कईज हिस्ट्री ऑफ इंडियन म्यूटिनी, :1864", डगलस एम.पीयर्से, इंडिया अंडर कॉलोनियल रूल 1700-1885, पियर्सन, पृष्ठ 95
4. मैटकॉफ, थाम्स आर., दा आफ्टरमैथ आफ रिवोल्ट, प्रिंसटन, 1965, पृष्ठ 61
5. रॉब पीटर, ऑन द रेबेलियन ऑफ 1857: एस्सेज फ्रॉम ई.पी.डब्ल्यू., ओरियंट लॉन्गमैंन 2008 पृष्ठ 64
6. एम्ब्री, ए.टी., 1857 इन इंडिया, डी.सी. हीथ कंपनी, 1963, पृष्ठ, 5-41
7. रॉबिंसन, जेन एंजेल्स ऑफ एल्बियन, 1996, पृष्ठ, 253-54 बंधोपाध्याय प्रेमांशु के., तुलसी लीव्स एंड दा गेंजेस वाटर : द स्लोगन ऑफ द फर्स्ट सिपॉय म्यूटिनी इन बैरकपुर, के.पी. बागची एंड कंपनी, 2003
8. विपिन चन्द्र, मॉडर्न इंडिया एन.सी.ई.आर.टी., 1994 पृष्ठ, 115
9. इरफान हबीब, "अंडरस्टैंडिंग 1857" सव्यासाची भट्टाचार्य, संपादक रिथिंकिंग 1857, ओरियंट लॉन्गमैंन, 2007 पृष्ठ 63
10. ए.आर. देसाई, सोशल बैकग्राउंड ऑफ इंडियन नेशनलिज्म, पापुलर प्रकाशन, 1993, पृष्ठ, 313r